

विष्णुसहस्रनाम

॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[illegible]

1942

[illegible]

[illegible]

凡人作事

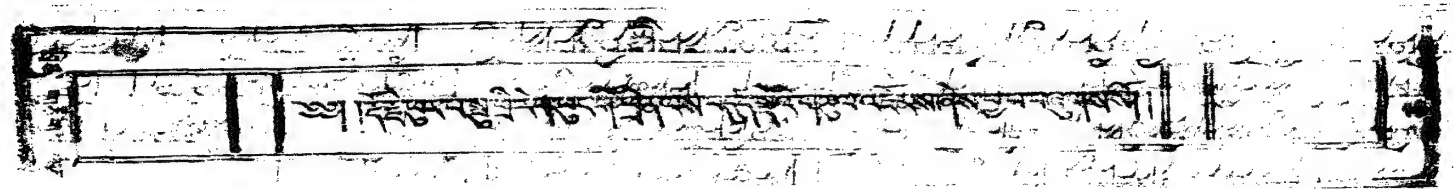
[illegible]



[illegible]

[illegible]

མཆོག་པ་པོ་ལྟོགས། མཐུས་མི་མཐུས་པ་མི་ལྟུང་པོ། སུམ་པ། གེ་མ་མེ་མི་མཐུས་པ་ལྟོགས།



འཕགས་པ་ལྟུང་མཁའ་འཁྱམས་པའི་ཐུགས་ཀྱི་མཛེས་པ། དེ་ལྟར་འཕགས་པ་ལྟུང་མཁའ་འཁྱམས་པའི་ཐུགས་ཀྱི་མཛེས་པ་
ལྟུང་མཁའ་འཁྱམས་པའི་ཐུགས་ཀྱི་མཛེས་པ་། འཕགས་པ་ལྟུང་མཁའ་འཁྱམས་པའི་ཐུགས་ཀྱི་མཛེས་པ་། འཕགས་པ་ལྟུང་མཁའ་འཁྱམས་པའི་ཐུགས་ཀྱི་མཛེས་པ་།
འཕགས་པ་ལྟུང་མཁའ་འཁྱམས་པའི་ཐུགས་ཀྱི་མཛེས་པ་། འཕགས་པ་ལྟུང་མཁའ་འཁྱམས་པའི་ཐུགས་ཀྱི་མཛེས་པ་། འཕགས་པ་ལྟུང་མཁའ་འཁྱམས་པའི་ཐུགས་ཀྱི་མཛེས་པ་།
འཕགས་པ་ལྟུང་མཁའ་འཁྱམས་པའི་ཐུགས་ཀྱི་མཛེས་པ་། འཕགས་པ་ལྟུང་མཁའ་འཁྱམས་པའི་ཐུགས་ཀྱི་མཛེས་པ་། འཕགས་པ་ལྟུང་མཁའ་འཁྱམས་པའི་ཐུགས་ཀྱི་མཛེས་པ་།

五

[illegible]

५३३७३८५५

[illegible]

[illegible]

[illegible]

Handwritten text in Devanagari script, likely a manuscript or a page from a book. The text is arranged in approximately 10 horizontal lines. The script is highly stylized and dense, with many characters appearing to be in a specific dialect or historical form. The text is written in black ink on a light background. The lines are closely spaced, and the overall appearance is that of a traditional Indian manuscript.

三

[illegible]

Handwritten text in a cursive script, likely a historical document or manuscript. The text is arranged in multiple columns, with some lines appearing to be part of a list or inventory. The script is dense and characteristic of traditional East Asian calligraphy.

Handwritten text in a cursive script, likely a historical document or manuscript. The text is arranged in multiple columns, with some lines appearing to be part of a list or inventory. The script is dense and characteristic of traditional East Asian calligraphy.

金剛經

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[The following text is highly stylized and appears to be a form of shorthand or cipher, possibly related to the historical context provided.]

[illegible]

卷之六

[illegible]

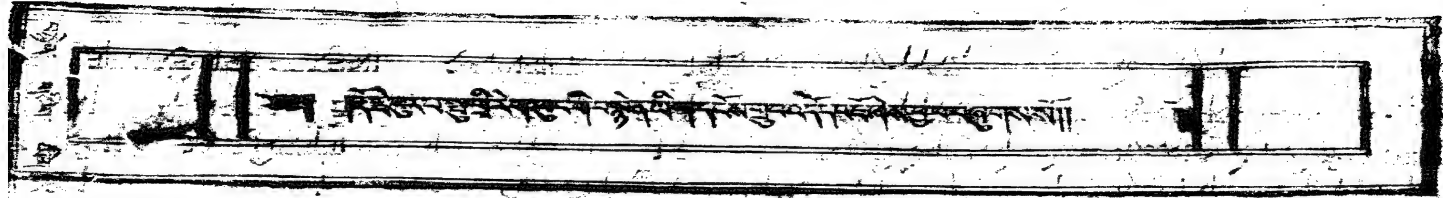
[illegible][illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 श्रीकृष्णार्चनम् ॥
 कृष्णं श्यामाङ्गं वन्दे नित्यं
 सदा मुखात्पुत्राय नमः ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 श्रीकृष्णार्चनम् ॥
 कृष्णं श्यामाङ्गं वन्दे नित्यं
 सदा मुखात्पुत्राय नमः ॥

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ विष्णुसहस्रनाम ॥ १ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ विष्णुसहस्रनाम ॥ २ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ विष्णुसहस्रनाम ॥ ३ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ विष्णुसहस्रनाम ॥ ४ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ विष्णुसहस्रनाम ॥ ५ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ विष्णुसहस्रनाम ॥ ६ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ विष्णुसहस्रनाम ॥ ७ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ विष्णुसहस्रनाम ॥ ८ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ विष्णुसहस्रनाम ॥ ९ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ विष्णुसहस्रनाम ॥ १० ॥

[The following text is highly degraded and illegible due to extreme blurring and noise.]



॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

| | | |
|--|--|--|
| <p> ॐ नमो भगवते वासुदेवाय श्रीमद्भगवद्गीता अर्जुनसंवादे </p> | <p> ॥ अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥ द्रुपद उवाच ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ </p> | <p> ॐ नमो भगवते वासुदेवाय श्रीमद्भगवद्गीता अर्जुनसंवादे </p> |
| <p>ॐ नमो भगवते वासुदेवाय</p> | <p>ॐ नमो भगवते वासुदेवाय</p> | <p>ॐ नमो भगवते वासुदेवाय</p> |

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

२५५३७१

प्रकरण ५

1554

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

पञ्चमः अक्षरः

अथ

कृष्णम्।

मन्त्र

127

24



15

कृष्ण

अद्वैतवाक्य

10

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥

[illegible]

ॐ ह्रीं क्लीं नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

आर्य समाज के लोग

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ कृष्णयक्ययज्ञेयम् ॥

॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । अथ श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ।
अर्जुन उवाच । द्रुपदमुनिर्ब्रह्मविद्यायां युधिष्ठिर उपाध्यायः ।
कुरुक्षेत्रे समवेता मुनीनां शर्मिस्तुत त्वत्कीर्तिमान् ।
स्वर्गाय च त्वमाश्रितः संपद्यस्व मे ह्यनुमतिम् ।
अथ कुरुप्रसादां विद्महे धर्मराजे महामती ।
उवाच । द्रुपद उवाच । कुरुक्षेत्रे संभवन् पुरा ।
द्रुपद उवाच । कुरुक्षेत्रे संभवन् पुरा ।

[illegible]

विष्णुसहस्रनामस्तोत्रम् ॥ १ ॥

1

[illegible]

[illegible]

